# स्त्री सबलीकरण की अवधारणा : शिवमूर्ति का कथा साहित्य

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़ आगरा के अन्तर्गत पीएच.डी. (हिन्दी)
उपाधि हेतु शोध प्रबन्ध की

**रूपरेखा**

**2019**


शोध निर्देशक

**डॉ0 नमस्या**
असि. प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, कला संकाय
डी.ई.आई.

शोध छात्रा

**सरिता**

विभागाध्यक्ष

**प्रो0 शर्मिला सक्सेना**
हिन्दी विभाग, कला संकाय
डी.ई.आई.

कला संकाय प्रमुख

**प्रो0 जे0 के0 वर्मा**

**हिन्दी विभाग : कला संकाय**
**दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)**
**दयालबाग़, आगरा–282005**

# स्त्री सबलीकरण की अवधारणा : शिवमूर्ति का कथा साहित्य

## प्रस्तावना एवं शोध परिचय –

स्त्री अस्मिता और उसके प्रखर रूप को इंगित करता हुआ सबलीकरण प्रयोग के आधार पर एक नवीन व्यापक शब्द है, जिसमें अधिकारों और शक्तियों का स्वाभाविक रूप से समावेश होता है। यह एक ऐसी मानसिक अवस्था है, जो कुछ विशेष आंतरिक कुशलताओं और शैक्षणिक सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि परिस्थितियों पर निर्भर करती है। जिसके लिए समाज में आवश्यक कानूनों सुरक्षात्मक प्रावधानों और उनके भली–भाँति क्रियान्वयन हेतु समस्त प्रशासनिक व्यवस्था का होना आवश्यक है। इस प्रकार स्त्री सबलीकरण से तात्पर्य एक ऐसी सामाजिक प्रक्रिया से है, जिसमें महिलाओं के लिए सर्वसम्पन्न और विकसित होने हेतु संभावनाओं द्वारा खुलें नए विकल्प तैयार हों। साधारण शब्दों में स्त्री सबलीकरण का अर्थ है महिलाओं को अपनी जिंदगी का फैसला करने की स्वतंत्रता देना या उनमें ऐसी क्षमताएँ पैदा करना ताकि वे समाज में अपना स्थान बना सकें और अपने अधिकारों की रक्षा कर सकें। स्त्री क्षमताओं के विकास को उनकी उन्नति को सशक्तिकरण कहने की स्थिति से आगे बढ़ने की आवश्यकता है स्त्री को शक्ति कहकर उसे दैवीय सत्ता का अंग बना देना भी पुरुष समाज की सोची समझी नीति है। इसके इतर सबलीकरण एक लोकतांत्रिक शब्द है। जो पुरुषों के समक्ष स्त्री को बराबरी का स्थान देता है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर नजर डालें तो प्राचीन से लेकर आधुनिक काल तक महिलाएँ शोषण की शिकार रही हैं। उत्तर वैदिक काल में स्त्री शिक्षा का अभाव होने लगा उसके विद्या अध्ययन के अधिकार को केवल धार्मिक शिक्षा के क्षेत्र तक ही सीमित कर दिया गया। इस काल में कन्या का जन्म विपत्ति लाने वाला माना जाने लगा। इस काल में स्त्री की सामाजिक स्थिति को देखते हुए इस काल को स्त्री अपकर्ष का प्रथम काल माना जाने लगा।

महिलाओं के सामाजिक, राजनीतिक अधिकारों को सतत् कम कर दिया और इससे वे परिवार के पुरुषों पर पूरी तरह से निर्भर हो गयीं। अनेक प्रकार के भेदभावपूर्ण व्यवहार तथा प्रथाओं की शुरूआत हो गयी। शिक्षा का अधिकार, खुद के लिए फैसला लेने का अधिकार, काम

करने का अधिकार आदि उनसे छीन लिए गए। प्राचीन काल में कुलीन स्त्रियों को ही शिक्षा का अधिकार था। साहित्य के विकास के आधार पर देखें तो आदिकाल से लेकर रीतिकाल तक स्त्री शोषण की कथाएं साहित्य एवं इतिहास में भरी पड़ी हैं। भारतीय समाज सुधारकों का भी शुरू से ही स्त्री शिक्षा में योगदान रहा इनमें– ईश्वर चन्द विद्या सागर राममोहन राय, ज्योतिबा फुले, सावित्री बाई फुले प्रमुख नाम हैं। मध्ययुगीन काल के दौरान भारत में मुस्लिम शासकों के आगमन के साथ महिलाओं की हालत और भी खराब हुई तथा ब्रिटिश काल के समय भी उनकी स्थिति में सुधार नहीं आया।

पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति के प्रभाव में आने से जन–जीवन आंदोलित हो उठा। अनेंकों सुधारवादी आन्दोलन हुए जिसमें स्त्री स्थिति के सुधार के लिए प्रयास किए गए। भारतीय नारियों ने अपने विकास पथ को नवचेतना से अवलोकित किया और उसने मध्यकाल की कठोर नैतिकता को उतार फेंका तथा अपने कर्त्तव्यों एवं अधिकारों पर पुनर्विचार कर अपने अस्तित्व की रक्षा में तल्लीन हो गयीं। स्त्री मुक्ति विषयक विचारों और आंदोलनों में मूल्यांकन विश्लेषण के पश्चात यह स्पष्ट है कि स्त्री की स्थिति समाज में दोयम दर्जे की स्थिति है और उस स्थिति के खिलाफ वैचारिक आन्दोलन करने वाले व स्त्री की भूमिका की पुनर्परिभाषा रचने वाले प्रमुख पाश्चात्य विद्वानों में हैं– जॉन स्टुअर्ट मिल, मैरी वोल्स्टन क्राफ्ट, कार्लमार्क्स, क्लारा जेटकिन, क्रुप्सकाया, सिमोन द बोउवार, सार्त्र, बेट्टी फ्राइडन आदि जिन्होंने अपने विचारों से इस आंदोलन को इसकी मंजिल की तरफ अग्रसर करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

भारत में स्त्री आन्दोलन का श्रेय ईश्वर चन्द विद्यासागर, राम मोहन राय, दयानंद सरस्वती, सावित्री बाई फुले, ज्योतिबा फुले, फातिमा बीबी, स्वामी विवेकानंद, रवीन्द्र नाथ टैगोर, महात्मा गाँधी, अम्बेडकर आदि को दिया जाता है। इन प्रबुद्ध भारतीयों ने महिलाओं के खिलाफ प्रचलित कुप्रथाओं को कम करने का प्रयास किया। अपने प्रयासों के माध्यम से सतीप्रथा को समाप्त करने का एवं विधवा पुनर्विवाह, एवं बालिकाओं के लिए स्कूल खोलने का प्रयत्न किया। बाल विवाह, पर्दा प्रथा को भी समाप्त करने का पुरजोर विरोध किया।

बाबा साहब अम्बेडकर ने महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार प्रदान करने के लिए अधिक प्रयास किये। भारत का संविधान सबसे अच्छा समानता प्रदान करने वाले दस्तावेजों में से एक है। यह विशेषतः लैंगिक स्तर पर होने वाले भेदभावों की समानता को सुरक्षित करने के प्रावधान प्रदान करता है। महिलाओं के अधिकारों को सुरक्षित रखने के लिए संविधान की प्रस्तावना, मौलिक अधिकार और अन्य संवैधानिक प्रावधान कई तरह के विशेष सुरक्षा उपाय प्रदान करते हैं।

हिन्दी साहित्य में स्त्री को अनेकों रूपों में चित्रित किया गया है आदिकाल में उसे केवल भोग विलास और तलवार के बल पर प्राप्त की जाने वाली वस्तु के रूप में देखा जाता था। भक्तिकाल में संत कवियों ने स्त्री के कामिनी रूप की निंदा की, मीरा आदि भक्तिकालीन कवयित्रियों ने स्त्री अस्मिता को भक्ति के रंग से प्रस्तावित किया। सूफी साहित्य ने स्त्री के पवित्र रूप को प्रस्तुत किया। सूर और तुलसी ने स्त्री के प्रति उपेक्षापूर्ण भावों की अभिव्यक्ति की। रीतिकाल में स्त्री केवल शृंगार, भोग विलास का साधन मात्र थी। आधुनिक काल में भारतेन्दु हरिश्चन्द ने स्त्री की दयनीय दशा को साहित्य रचना का विषय बनाया तथा उनके समकालीन और आगे आने वाले साहित्यकारों ने अपने स्त्री को विलास का साधन मात्र प्रस्तुत न करके उसे उसके बंधन से मुक्त कर उसका प्राचीन गौरव फिर से प्रदान करने की चेष्टा की।

स्त्री मुक्ति, स्त्री विमर्श पर बहुत सी रचनायें प्रकाश में आईं। बहुत से उपन्यास और कहानियाँ लिखी गयीं, इनमें स्त्री का सशक्त रूप उभर कर सामने आया। कथा सम्राट प्रेमचन्द ने स्त्री को पुरानी कामुक धारणाओं से निकल कर आदर्श और यथार्थ के विस्तृत आँगन में लाकर खड़ा किया तथा उनके अंदर जो अच्छाई है उसे उद्घाटित किया। प्रेमचंन्द की स्त्री कहीं दयनीय है तो कहीं सशक्त। 'गोदान' उपन्यास में धनिया और मालती का चित्रण सशक्त नारियों के रूप में किया गया है। प्रेमचन्द के यहां स्त्री पहली बार नायकत्व की अवधारणा को तोड़कर खुद नायक के रूप में आती है। इसी तरह भगवती चरण वर्मा के 'भूले बिसरे चित्र' में गंगा, अज्ञेय के 'नदी के द्वीप' की रेखा, रांगेय राघव का 'कब तक पुकारूँ' की प्यारी और कजरी भी सशक्त स्त्रियाँ हैं।

समकालीन कथाकारों ने भी स्त्री सशक्तिकरण को लेकर तमाम रचनायें की हैं तथा समय–समय पर नए कथाकार उभर कर सामने आये हैं जिनके कथा संसार में स्त्री के अनेकों रूप देखने को मिलते हैं। कृष्णा सोबती, शिवानी, ममता कालिया, नासिरा शर्मा, मन्नु भण्डारी, प्रभा खेतान, मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव, मैत्रेयी पुष्पा जैसे कथाकारों परंपरा में शिवमूर्ति का नाम आदर के साथ लिया जाता है। शिवमूर्ति जी ने लगभग 60 के दशक में लिखना आरम्भ किया और जिस परिवेश में रहे उसे कहानी के रूप में अभिव्यक्त किया। उन्होंने जो भी देखा, महसूस किया उसे ही अपने कथा साहित्य का हिस्सा बनाया।

कथाकार शिवमूर्ति का जन्म मार्च 1950 में सुल्तानपुर (उत्तर प्रदेश) जिले के गाँव कुरंग में एक सीमान्त किसान परिवार में हुआ। पिता के गृह त्यागी हो जाने के कारण शिवमूर्ति जी को अल्पवय में ही आर्थिक संकट तथा असुरक्षा से दो चार होना पड़ा, इसके कारण उन्हें जड़ी बूटियां बेचने जैसे काम करने पड़े। बचपन में पिता द्वारा पाठ करते–करते उन्हें रामचरितमानस की चौपाइयाँ याद हो गयी थीं। धीरे–धीरे उनकी रुचि कविता और कहानियों की ओर हो गयी तभी से उनका लेखन कार्य के प्रति रुझान बढ़ा उनका लेखन संसार 1968 से शुरू हो जाता है। बीकानेर (राजस्थान) से 'वातायन' पत्रिका में इनकी पहली कहानी 'पानफूली' छपी तथा इसी समय आगरा से प्रकाशित पत्रिका 'युवक' में इनकी कहानी 'मुझे जीना है' छपी ।

1980 में इनकी चर्चित कहानी 'कसाईबाड़ा' मुम्बई से प्रकाशित पत्रिका 'धर्मयुग' में प्रकाश में आई। 1981 और 1984 में 'सारिका' में क्रमशः 'भारतनाट्यम' और 'सिरी उपमा जोग' कहानियाँ छपीं। जून 1987 में कहानी 'तिरिया चरित्तर' हंस के अंक में छपी तथा हंस में ही 1991 में अकालदंड कहानी आई।

कथा लेखन के क्षेत्र में प्रारम्भ से ही प्रभावी उपस्थिति दर्ज कराने वाले शिवमूर्ति की कहानियों में निहित नाट्य संभावनाओं ने दृश्य माध्यम को भी प्रभावित किया। उनकी चर्चित कहानियाँ 'कसाईबाड़ा' 'तिरिया चरित्तर' 'भारतनाट्यम' तथा 'सिरी उपमा जोग' पर फिल्में बनीं। तिरिया चरित्तर तथा कसाईबाड़ा के हजारों मंचन हुए। इनकी अनेक रचनाऐं देशी–विदेशी भाषाओं में अनुदित हैं इनके द्वारा लिखित रचनाएँ हैंः–

**कहानी संग्रह–** केसर कस्तूरी 1991, कुच्ची का कानून 2016

**उपन्यास–** त्रिशूल 1995, तर्पण 2005, आखिरी छलांग 2008

उनकी एक अन्य पुस्तक 'सृजन का रसायन' 2004 में आई यह आत्मकथात्मक और सृजनात्मक दोनों के मेल से लिखी गयी पुस्तक है। लेखक कैसे बनता है, रचनायें कैसे आकार लेती हैं, घटनायें कैसे रचनाओं के रूप में निर्मित होती हैं इसका वर्णन लेखक ने इस सृजनात्मक गद्य में किया है।

**प्रमुख सम्मान–**

'तिरिया चरित्तर' कहानी हंस पत्रिका द्वारा सर्वश्रेष्ठ कहानी के रूप में (1988) पुरस्कृत की गई।

आनन्द सागर स्मृति कथा क्रम सम्मान 2002

अवध भारती सम्मान 2010

सृजन सम्मान 2011

लमही सम्मान 2012

शिवमूर्ति जी दो कहानी संग्रहों को मिलाकर लगभग आठ कहानियाँ लिखीं और तीन उपन्यास लिखे वे सब हिन्दी साहित्य में अपना नाम दर्ज करा चुकी है। उनकी कहानियाँ ग्रामीण जीवन से सरोकार रखती है। उनकी साहित्यिक रचनायें कई साहित्यिक धाराओं से अंतः सम्बन्ध है– पारम्परिक आंचलिक कथा साहित्य, दलित लेखन, दलित स्त्री लेखन।

ग्रामीण परिवेश पर केन्द्रित उनकी कहानियों के कथ्य उत्तर आधुनिक और भूमंडलीकरण के समय और सच से जुड़े हैं, इसलिए उनकी व्याप्ति सार्वभौमिक है। शिवमूर्ति कहीं–कहीं लिखने में इतने प्रभावी एवं समर्थ रहे हैं कि वे रेणु और काशीनाथ सिंह की तरह अपनी कहानियों में नए प्रयोग करते रहते हैं कभी भाषिक स्तर पर तो कभी कथा क्रम में।

शिवमूर्ति की कहानियाँ अभिशप्त मानव जीवन का दस्तावेज हैं। दलित समाज और स्त्री जीवन की त्रासदियों को शिवमूर्ति ने जिस सामर्थ्य और संवेदना के साथ चित्रित किया है वह अन्यत्र दुर्लभ है। समाज में जिस प्रकार स्त्री की छवि पहले थी शिवमूर्ति उसी रूप से उसे देखते हैं तथा स्त्री जीवन को नयी वास्तविकता के साथ चित्रित करने की कोशिश करते हैं। उनके स्त्री

पात्रों का संघर्ष/आत्मसंघर्ष कहानी की मूल धुरी बन गया है। स्त्री सदियों से जिस पीड़ा एवं दंश को झेलती रही है उन्होंने उनके विविध पक्षों को अपनी कहानियों में बहुत मार्मिक ढंग से उकेरा है तथा स्त्री जीवन के हर पहलू को चित्रित किया है। स्त्री जीवन की प्रत्येक समस्याएँ उनमें विद्यमान साहस, त्याग, दृढ़ता और संयम जैसे उच्च मानवीय गुणों का चित्रण उनकी कहानियों में किया है।

शिवमूर्ति की कहानियों में स्त्री पात्र प्रधान है। दलित चिन्तक और आलोचक ओम प्रकाश वाल्मीकि कहते हैं–

**''उनकी कहानियाँ नायिका प्रधान हैं, तिरिया चरित्तर, सिरी, उपमा जोग, कसाईबाड़ा, तर्पण आदि में स्त्री की वेदना उनका संघर्ष, अपमान, प्रताड़ना, कामवासना, पारस्परिक रिश्तों की जकड़न, पारिवारिक विघटन सभी कुछ गहरी वेदना के साथ अभिव्यक्त हैं।''**

शिवमूर्ति की कहानियों में स्त्री अस्मिता अहम् मुद्‌दा है। 1980 में प्रकाशित उनकी कहानी 'कसाईबाड़ा' में स्त्री जीवन तथा उसके संघर्ष का चित्रण किया गया है। गाँव का मुखिया गाँव की लड़कियों का झूठ विवाह करा कर उन्हें बेच देता है। कहानी की नायिका शनिचरी अपनी बेटी को वापस लाने के लिए गाँव के मुखिया के घर के सामने आमरण अनशन करती है। शनिचरी एक ऐसा पात्र है जो स्त्री होकर भी अकेले खड़ी है तथा अंत समय तक अनशन पर रहती है व अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करती है।

शिवमूर्ति की कहानियों में स्पष्ट प्रतीत होता है कि इनकी कहानी की स्त्रियाँ भाग्यवादी बनकर नहीं बैठतीं वे न्याय के लिए लड़ती हैं, जूझती हैं यह जरूरी नहीं कि उन्हें इस संघर्ष से विजय मिले, जरूरी यह है कि वे संघर्षशील है उनकी संघर्ष शीलता जारी रही तो जीत होगी आज नहीं तो कल। अन्याय के विरुद्ध लिए उनका संघर्ष जारी रहता है। शिवमूर्ति के स्त्री पात्र बेचारे बनकर नहीं रहते। न्याय और अधिकारों के लिए शक्तिसंपन्न वर्ग को चुनौती देती हैं।

शिवमूर्ति की कहानी 'तिरियाचरित्तर' में उस पुरूष समाज का चित्रण है जो हर स्त्री को भोग लेना चाहता है कहानी की नायिका विमली जो बड़ी हिम्मत और जतन से स्वयं के अस्तित्व को सुरक्षित रखती है, अपने ही ससुर के धार्मिक कपट और वासना का शिकार हो, दंड भोगती है

किन्तु वह प्रतिरोध भी करती है, यही प्रतिरोध उसे प्रेमचंद की धनिया, नागार्जुन की उग्रतारा या रांगेय राघव से जोड़ता है।

शिवमूर्ति के कथा साहित्य में दलित स्त्री का विशेष रूप से शोषण होता है पर वे उसका मुखर विरोध करती हैं चाहे वह कसाईबाड़ा की शनिचरी, तिरियाचरित्तर की विमली, अकालदंड की सुरजी, केशर कस्तूरी की केशर आदि तमाम स्त्री पात्र है। कभी स्त्री पात्र अन्याय, दमन, शोषण का जमकर विरोध करती हैं।

## शिवमूर्ति पर हुए पूर्ववर्ती शोध कार्य

एक प्रख्यात एवं प्रभावी लेखक होने के कारण शिवमूर्ति के साहित्य पर समीक्षा चर्चाएं समय समय पर होती ही रहती है किन्तु शोधकार्य की दृष्टि से देखने पर उनके साहित्य पर निम्न शीर्षकों के अन्तर्गत शोधकार्य सम्पन्न किए गए हैं–

| **शोध विषय** | **शोधार्थी** | **विश्वविद्यालय** |
|---|---|---|
| शिवमूर्ति के कथा साहित्य में युगीन समस्याएँ | राम मनोहर मिश्र | महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वकोश |
| शिवमूर्ति का कथात्मक साहित्य 2017 | पंजाब हजारे, प्रतिभा धरे | डॉ० बाबा साहेब अम्बेडकर, मराठवाड़ा यूनिवर्सिटी |

## शोध की आवश्यकता –

साहित्य हो अथवा समाज हो किसी भी परिधि में किसी भी विषय का जब हम शोध करते हैं तो वही शोध अंतिम शोध नहीं होता है जैसा कि सर्वविदित है हर युग में, हर चिंतन, हर विचार पुनः विश्लेषित किया जाता है। उठने वाले नए प्रश्नों के हल पुनः ढूँढे जाते हैं, खोजे जाते हैं। स्त्री पर स्त्री विमर्श के रूप में महिला सबलीकरण के रूप में कई तरह से कई बार अध्ययन विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत शोध कार्य स्त्री सबलीकरण से एक चरण आगे स्त्री सबलीकरण को आधार बनाकर प्रस्तुत किया जाएगा। जिस प्रकार विकलांग शब्द की अपनी यात्रा है दिव्यांग। जिस प्रकार अंग्रेजी के 'हेण्डीकेप्ड' शब्द की अपनी यात्रा है फिज़ीकली चैलेन्ज़ड। शब्द और शब्दों का प्रभाव और व्यापक प्रभाव हेतु एक शब्द दूसरे में परिवर्तित होता जाता है। प्रत्येक शब्द

स्वयं में एक परिपूर्ण विचार होता है, उसकी एक विकास यात्रा है 'बलवान' शब्द का प्रयोग पुरुषों के लिए किया जाता रहा है यह स्त्री के अधिकारों के विकास की यात्रा ही है कि पौरुष का बोध कराने वाला वो शब्द अब हर स्तर पर पुरूषों के समकक्ष स्थान पाने वाली स्त्री के लिए प्रयुक्त किया जाता है। सर्वप्रथम इस सबलीकरण शब्द को अपने शोध के विषय के रूप में सम्मिलित कर हिन्दी साहित्य जगत में इसे प्रचलित बनाना शोध की आवश्यकता है। स्त्री सशक्तिकरण में स्त्री को साहस, निर्भीकता प्राप्त तो होती है पर दैवीयकरण की परिधि में लिपटी हुई सी अनुभूत होती है। सबलीकरण शब्द मराठी से हिन्दी में स्त्रीवादी अधिकारों के लिए संघर्षरत आन्दोलनों से आया है जिसे प्रयुक्त करते हुए स्त्री अधिकारों की एक लोकतांत्रिक समानता की दृष्टि को प्रस्तुत किया जायेगा। स्त्रियों द्वारा स्त्रियों के लिए लिखा गया साहित्य स्त्री सम्वेदना को अभिव्यक्त करता है तो ऐसे कई विद्वान लेखक हैं जिन्होंने स्त्री चरित्रों को उनकी जीवन की विडम्बनाओं को अपने साहित्य में जीवंत किया है। शिवमूर्ति उन्हीं में से एक हैं। यूँ तो शिवमूर्ति पर कई शोध कार्य हुए हैं किन्तु अध्ययन करने पर और स्वयं लेखक से बातचीत करने पर यह विदित हुआ कि मूलतः उनके चरित्रों पर शोध कार्य नगण्य है अतएव शोध का विषय शिवमूर्ति के स्त्री पात्रों को बनाते हुए शोध कार्य में स्त्री सबलीकरण पर विचार किया जाएगा। एक अनछुआ विषय होने के कारण यह विषय 'स्त्री सबलीकरण की अवधारणाः 'शिवमूर्ति का कथा साहित्य' शोध कार्य के लिए आवश्यक विषय है। शिवमूर्ति का कथा साहित्य वंचितों, दलितों एवं स्त्री को आधार बनाता है उनके साहित्य में स्त्री जीवन संघर्ष के जीवन्त वर्णनों के कारण स्त्री सबलीकरण को शोध का विषय बनाया गया है।

**शोध का उद्देश्य एवं महत्त्व –**

शिवमूर्ति शोध का कथा साहित्य के अन्तर्गत समाज मे वर्णित स्त्री/पुरुष असमानता, स्त्रियों के प्रति भेदभाव, जीवन के अनुभवों उनके विचारों का अध्ययन एवं उनके अधिकारों एवं कर्तव्यों का अध्ययन शोध का महत्त्वपूर्ण विषय रहेगा। यह शोध कार्य पूर्ण रूप से नवीन और प्रासंगिक है। शोध का कार्य पूर्ण रूप से मौलिक होगा। इस शोध के माध्यम से अन्य शोधार्थियों को नवीन और मौलिक जानकारी प्राप्त होगी। शोधप्रविधियों का समुचित प्रयोग करते हुए स्त्री

सबलीकरण की विकासात्मक परिभाषाओं और चिन्तन धाराओं का विवेचनात्मक अनुशीलन किया जाएगा बौद्ध युग से लेकर आधुनिक युग तक स्त्री सबलीकरण विषयक जितने भी शब्दों का प्रयोग किया गया है उनका और उनसे संबंधित आन्दोलनों का व्यापक विश्लेषण किया जाएगा। प्रत्येक नवीन शब्द नई विचारधारा का जनक होता है। तत्पश्चात यह उद्देश्य रहेगा कि आधुनिक समय के समस्त भारतीय, पाश्चात्य विचारकों के विचारों को प्रस्तुत करते हुए शोध कार्य किया जाएगा। शोध का सर्वप्रमुख उद्देश्य स्त्री सबलीकरण की अवधारणा को अभिव्यक्त करते हुए शिवमूर्ति की कथा में स्त्री चरित्र का विश्लेषण एवं विवेचन किया जाएगा। शोध कार्य बिना किसी पूर्वाग्रह के समस्त तथ्यों के संकलन के उपरान्त मौलिक एवं नवीन रूप से सम्पन्न किया जाएगा।

**शोध प्रविधि –**

प्रस्तावित शोध को करते समय शोध की मौलिकता के साथ शोध की प्राथमिकता को ध्यान में रखते हुए विभिन्न संदर्भ ग्रन्थ देखते हुए समीक्षात्मक विवेचनात्मक, विश्लेषणात्मक, विचारात्मक, प्रविधियों का प्रयोग किया जाएगा। इसके अतिरिक्त विषय से सम्बधित लेखकों से विचार विमर्श के साथ साक्षात्कार और प्रश्नावली शोध प्रविधि का प्रयोग करने हुए शोध विषय एवं शोध कार्य को सार्थक बनाने का प्रयास किया जाएगा। संदर्भ ग्रंथों, आधार ग्रंथों, शब्द कोश, विश्वकोश के प्रयोग द्वारा शोध कार्य की तथ्यपरक सामग्री को एकत्रित किया जाएगा।

**साहित्य सर्वेक्षण –**

शोध विषय से सम्बन्धित जानकारी विभिन्न विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों से प्राप्त की गई हैं–

1 डी.ई.आई. दयालबाग़ विश्वविद्यालय, आगरा

2 केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा

3 आगरा विश्वविद्यालय, आगरा

4 दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

5 जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली

6 जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, दिल्ली

# स्त्री सबलीकरण की अवधारणा : शिवमूर्ति का कथा साहित्य

## रूपरेखा

**प्रथम अध्याय – 1 स्त्री सबलीकरण की अवधारणा : वैचारिक विकासात्मक अध्ययन**

**1.1 स्त्री सबलीकरण की भारतीय अवधारणा–**

1.1.1 वेदों में स्त्री सम्बन्धी चिन्तन

1.1.2 बौद्ध युग में स्त्री विषयक चिंतन

1.1.3 थेरी गाथा में स्त्री

1.1.4 भक्तिकाल एवं स्त्री ( आन्दाल, रैदास, कबीर, मीरा, सूरदास, तुलसी आदि)

1.1.5 आधुनिक काल एवं स्त्री (ईश्वर चन्द विद्या सागर, राम मोहन राय, ज्योतिबा फुले, सावित्री बाई फुले, फातिमा बीबी, अम्बेडकर आदि)

**1.2 स्त्री सबलीकरण की वैश्विक अवधारणा–**

1.2.1. यूरोपीय विचारक – मैरी वोलस्टोनक्राफ्ट, जॉन स्टुअर्ट मिल, कार्लमार्क्स, क्लारा जेटकिन, क्रुप्सकाया, सिमोन द बोउवार, सार्त्र, बेट्टी फ्राइडन अन्य।

**1.3 स्त्री सबलीकरण के विविध आयाम –**

1.3.1 स्त्री सबलीकरण का धार्मिक स्वरूप

1.3.2 स्त्री सबलीकरण का साहित्यिक स्वरूप

1.3.3 स्त्री सबलीकरण का आर्थिक स्वरूप

1.3.4 स्त्री सबलीकरण का सामाजिक–सांस्कृतिक स्वरूप

1.3.5 स्त्री सबलीकरण का राजनैतिक स्वरूप

**द्वितीय अध्याय – 2. हिन्दी कथा साहित्य : स्त्री मुक्ति के प्रश्न एवं सबलीकरण की अवधारणा**

2.1 हिन्दी कथा साहित्य में स्त्री की जीवन स्थिति

2.2 हिन्दी कथा साहित्य में प्रतिरोधी स्त्री चेतना

2.3 हिन्दी कथा साहित्य में स्त्री सबलीकरण के विविध आयाम–

2.3.1. लैंगिक भेदभाव, पितृसत्ता का प्रभाव

2.3.2. शिक्षा के लिए संघर्ष

2.3.3 रोजगार में समानता के लिए संघर्ष

2.3.4. सामाजिक समानता का अधिकार

2.3.5. राजनैतिक समानता का अधिकार

2.3.6. अन्य अधिकारों के लिए संघर्ष

2.4 आधुनिक स्त्री विमर्श

2.4.1. स्त्री विमर्श अथ से अद्यतन विचार प्रक्रिया

2.5 स्त्री विमर्श के विविध सोपान–

2.5.1. ग्रामीण स्त्री

2.5.2. दलित स्त्री

2.5.3. महानगरीय स्त्री

2.5.4. आदिवासी स्त्री

2.5.5. हिजड़ा स्त्री

**तृतीय अध्याय –3. शिवमूर्ति एवं उनका समग्र साहित्य**

3.1 कथाकार शिवमूर्ति एक परिचयात्मक अध्ययन

3.1.1 लेखकीय व्यक्तित्व

3.1.2 कृतित्व परिचयात्मक

**चतुर्थ अध्याय – 4.शिवमूर्ति एवं उनका कथा साहित्य : स्त्री सबलीकरण के विभिन्न पक्ष**

4.1. शिवमूर्ति की कहानियों में स्त्री पात्रों की विभिन्न अवस्थाएं–

4.1.1. निराशा

4.1.2. अवसाद

4.1.3. संघर्ष

4.1.4. प्रतिरोध

4.1.5. मुक्ति के प्रश्न

4.2. शिवमूर्ति के उपन्यासों में स्त्री दशा के विविध रूप

4.2.1. स्त्री जीवन में निराशा की स्थिति

4.2.2. अवसाद की मनोदशा में स्त्री जीवन

4.2.3. संघर्षरत स्त्री

4.2.4. प्रतिरोधी चेतना युक्त स्त्री

4.2.5. मुक्ति के प्रश्न को स्वर देती स्त्री

**पंचम अध्याय –5. शिवमूर्ति एवं कथा भाषा, सौंदर्यमूल्य**

5.1 भाषा (कथा भाषा, प्रतिरोध की भाषा)

5.2 शिल्प बिम्ब प्रतीक आदि का अध्ययन।

**उपसंहार –**

परिशिष्ट

आधार ग्रंथ

विश्वकोश–शब्दकोश

संदर्भ ग्रंथ

पत्र–पत्रिकाएँ

साक्षात्कार

वेबसाइट्स

प्रश्नावली

नोट– शोध निर्देशक की सलाह एवं निर्देश से शोध रूपरेखा में 20 प्रतिशत परिवर्तन संभव है।

# आधार ग्रंथ

| क्र.सं. | लेखक | पुस्तक | प्रकाशक / प्रकाशन | वर्ष |
|---|---|---|---|---|
| 1 | शिवमूर्ति | केसर कस्तूरी (कहानी संग्रह) | राजकमल प्रकाशन, दिल्ली | 1990 |
| 2 | शिवमूर्ति | त्रिशूल (उपन्यास) | राजकमल प्रकाशन, दिल्ली | 1995 |
| 3 | शिवमूर्ति | तर्पण (उपन्यास) | राजकमल प्रकाशन, दिल्ली | 2005 |
| 4 | शिवमूर्ति | आखिरी छलांग | ई. बुक्स | 2008 |
| 5 | शिवमूर्ति | कुच्ची का कानून (कहानी संग्रह) | राजकमल प्रकाशन, दिल्ली | 2014 |

## संदर्भ ग्रन्थ –


1 ग्रामीण यथार्थ और शिवमूर्ति की कहानियाँ, प्रो. श्यौराज सिंह बेचैन

2 शिवमूर्ति के उपन्यासों में युग चेतना, हरिमोहन शर्मा

3 मेरे साक्षात्कार, शिवमूर्ति, किताब घर प्रकाशन, दिल्ली संस्करण 2013

4 स्वातंत्र्योतर हिन्दी कथा साहित्य और ग्राम जीवन, विवेकी राय (लोकभारती प्रकाशन)

5 आधुनिक हिन्दी कहानी, डॉ. कृष्ण कान्ता भारद्वाज, अनंग प्रकाशन

6 सृजन का रसायन, शिवमूर्ति, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली संस्करण 2014

7 स्त्री विमर्श और हिन्दी साहित्य, डॉ. उषा रानी, संजय प्रकाशन

8 आधुनिक हिन्दी कहानी, स्त्री जीवन मूल्य, अनंग प्रकाशन, दिल्ली

9 स्त्रियाँ पर्दे से प्रजातंत्र तक, दुष्यंत, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली संस्करण–2012

10 भारत में स्त्री असमानता, गोपा जोशी, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली यूनिवर्सिटी, दिल्ली

11 स्त्री प्रश्न, नमिता सिंह, वाणी प्रकाशन, दिल्ली–संस्करण–2017

12 स्त्री नैतिकता का तालिबानीकरण, रमणिका गुप्ता, नवचेतन प्रकाशन संस्करण.2014

13 महिलाओं के मौलिक अधिकार, रमा शर्मा, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस–संस्करण–2016

14 स्त्री को पुकारता है स्वप्न, गीता श्री, अरुणा सिंह, वाणी प्रकाशन, दिल्ली संस्करण–2013

15 स्त्री दृष्टि और प्रभा खेतान, रेखा कुर्रे, कल्पना प्रकाशन, प्रथम संस्करण–2018

16 स्त्री सशक्तिकरण : विभिन्न आयाम, विनोद गजभिये , डॉ. अल्का हिरकने ओमेगा प्रकाशन– संस्करण–2013

17 कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणा पत्र, कार्लमार्क्स, फ्रेडरिक एंगेल्स, क्रिएटस्पेस इंडिपेंडेट पब्लिशिंग प्लेटफार्म, संस्करण 2015

18 वंचितों के प्रवक्ता शिवमूर्ति, संजय नवले, अमन प्रकाशन, संस्करण–2019

19 कथाकार शिवमूर्ति, कृष्ण कुमार श्रीवास्तव, मानव प्रकाशन, संस्करण–2017

## पत्र–पत्रिकाएँ–

1 लमही, शिवमूर्ति (त्रैमासिक) लखनऊ, सम्पादक–विजय राय

2 मंच, जनवरी–मार्च 2011 विशेषांक, सम्पादक–मयंक खरे

3 संवेद, फरवरी–अप्रैल 2014 विशेषांक, किशन कालजयी, दिल्ली

4 हंस, फरवरी–मई 2011, राजेन्द्र यादव

5 नया ज्ञानोदय, 2007, 2009, रवीन्द्र कालिया

6 स्त्रीकाल (त्रैमासिक) संजीव चन्दन

7 अपनी माटी (ई–पत्रिका), सौरभ कुमार, चितौड़गढ

8 रिदम, डॉ० नामदेव, 2019, नयी दिल्ली

9 दलित अस्मिता, विमल थोरात, नयी दिल्ली

10 मंतव्य।